कविता **जाल** - पंकज त्रिवेदी

पापा को मिलने आई
बेटी,
वेकेशन में बूनती है प्रश्नों का जाल...

पापा,
उलझते हैं उन में
यत्न करते हैं छूटने का,
फ़ँसते रहते सतत...

पापा, बेचैन यहाँ
मम्मी, वहाँ
बेटी, यहाँ-वहाँ

मम्मी पढ़ाती, सख़्त स्वभाव से
कहानी सुनाएं पापा,
फिल्म, फ़न वर्ल्ड और लुत्फ़
हील स्टेशन का
सिर्फ अट्ठाईस दिनों का फ़रमान

बेटी प्रश्न करती, मौन पापा
वहाँ गुस्सा मम्मी का
एक्वेरियम में तैरती वह
पहुंच जाती है एक कोने में
अकेली, तनहा,
सजल...!!!

हर्ष, गोकुलपार्क सोसायटी, 80 फूट की सड़क, सुरेन्द्रनगर-363002